प्रातः सभा 15/1/69 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बाप की महिमा तो बच्चों को सुनाई है। वह ज्ञान का सागर सत्, चित्, आनन्द स्वरूप है। शान्ति का सागर है। उनको सभी बेहद की सफीयते दी जाती हैं। अभी बाप है ज्ञान का सागर और इस समय जो भी मनुष्य हैं सभी जानते हैं हम भक्ति के सागर हैं। भक्ति में जो सबसे तीखे होते हैं उनको मान मिलता है। इस समय कलियुग में है भक्ति। दुःख। सतयुग में है ज्ञान का सुख। ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान है। तो यह महिमा सिर्फ़ एक बाप की है और बच्चों की है; क्योंकि बाप बच्चों को पढ़ाते हैं अथवा यात्रा सिखलाते हैं। बाप ने समझाया है दो यात्राएँ हैं। भक्त लोग तीर्थ करते हैं, चारों तरफ़ चक्र लगाते हैं। इतना टाइम विकार में नहीं जाते। शराब आदि कोई भी छी छी चीज़ नहीं खाते हैं। कब बदरीनाथ, कब श्रीनाथ, कब काशी चक्र लगाते हैं। भक्ति करते हैं भगवान की। एक भगवान तो होना चाहिए ना। सभी सभी तरफ़ तो चक्र नहीं लगाना चाहिए। शिवबाबा के तीर्थ का भी चक्र लगाते हैं। सबसे बड़ा बनारस का तीर्थ गाया हुआ है। जिसको शिव की पुरी कहते हैं। चारों तरफ़ जाते हैं; परन्तु जिनका दर्शन करने जाते हैं अथवा जिनकी भक्ति करते हैं उनके बायोग्राफी वा उनके आक्युपेशन का पता नहीं है। इसलिए उनको कहा जाता है अंधश्रद्धा। किसकी पूजा करना, माथा टेकना और उनके जीवनकहानी को न जानना इसको कहा जाता है ब्लाइन्ड फेथ। घर में भी मनाते हैं। देवियों की कितनी पूजा करते हैं। मिट्टी के वा पत्थर के देवियाँ बनाकर बहुत उनको श्रृंगारते हैं। समझो लक्ष्मी का जड़ चित्र बनाते हैं। उनसे पूछो इनकी बायोग्राफी बताओ। कहेंगे, यह सतयुग की महारानी थी। त्रेता की फिर सीता थी। फिर उनका नम्बर आता है। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। ऐसे नहीं कि सारे सतयुग में 1250 वर्ष एक नारायण वा एक ही लक्ष्मी का राज्य होता है। नहीं। एक एक 150 वर्ष राज्य करते हैं। फिर हेयर अपरेन्ट्स को देते हैं। तो भक्ति मार्ग में यात्राओं पर क्यों जाते हैं, यह सभी हैं भगवान से मिलने के उपाय। शास्त्र पढ़ना यह भी उपाय है। भगवान से मिलने लिये। इतने साधु सन्यासी आदि स्नान क्यों जाकर करते हैं, पवित्र बन भगवान से मिलने लिये। भक्ति मार्ग में जो भी उपाय करते हैं भगवान से मिलने लिये; परन्तु भगवान है कहाँ? कहेंगे वह तो सर्वव्यापी है। कितने मूर्ख बुद्धि हैं। जिसका पूरा पता नहीं, ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। फिर इतनी यात्राएँ करना, भटकना क्यों। यह तो जड़ चित्र है ना। अच्छा, भला पूजा करने से भगवान मिला है फिर भटकते क्यों हो। कहते हैं यह तो जड़ है। हम तो चैतन्य से मिलने चाहते हैं। अभी तुम समझते हो पढ़ाई से हम यह बनते हैं। बाप खुद आकर पढ़ाते हैं। जिसके मिलने लिये आधा कल्प भक्तिमार्ग चलता है। कहते .... बाबा पावन बनाओ और अपना परिचय भी दो कि आप हैं कौन। साधु सन्त आदि तो कब यह नहीं सम..... हैं। आत्मा जो बिन्दी है उन सभी आत्माओं का एक बाप है। उनके सभी आत्माएँ बच्चे हैं। उन सभी का ..... परमधाम में रहते हैं। आत्माओं को यहाँ शरीर मिला हुआ है। इसलिये यहाँ कर्म करती है। वह तो कर्मातीत अवस्था में अपने परमधाम में बैठे हैं। बाकी देवी–देवताओं के लिये कहेंगे यह तो सतयुग में राज्य करके ..... हैं। सतयुग कब था? कहेंगे स्वर्ग को लाखों वर्ष हुये। अभी क्रिश्चियन लोग तो समझते हैं बरोबर गॉड फादर ने जो पैराडाइज स्थापन किया, हम उसमें नहीं थे। भारत में पैराडाइज था। उन्हों की बुद्धि फिर भी अच्छी है। भारतवासियों की तो बिल्कुल ही तमोप्रधान बुद्धि है। उन्हों की तमो है तो कुछ ठीक रीति समझते हैं। भारतवासी सतोप्रधान बनते हैं तो फिर तमोप्रधान भी बनते हैं। वह इतना सुख नहीं देखते हैं तो, इतना दुख भी नहीं देखते हैं। यह भी तुम समझते हो उनका सुख अभी पिछाड़ी का है। अभी क्रिश्चियन लोग कितना सुखी हैं पहले तो वह गरीब थे। पैसा तो मेहनत से कमाया जाता है ना। पहले एक क्राइस्ट आता है फिर ..... स्थापन होता है, वृद्धि होती जाती है। एक से दो, दो से चार फिर आठ ऐसे वृद्धि होते जाते है। अभी देखो क्रिश्चियन का झाड़ कितना बड़ा हो गया है। फाउंडेशन है देवी–देवता घराणा। वह फिर यहाँ इस समय स्था..... है। पहले एक ब्रह्मा फिर ब्रह्मा के एडॉप्शन सन्तानवृद्धि को पाते हैं। बाप पढ़ाते हैं तो बहुत ढेर ब्राह्मण

हो जाते हैं। पहले तो यह एक था ना। एक से कितने वृद्धि हुये हैं। कितने होने की है। जितने सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी देवी–देवताएँ थे। इतने सभी बनने के हैं। पहले है एक बाप। उनकी आत्माएँ तो हैं ही। बाप के हम आत्माएँ उनकी सन्तान कितने हैं! 500 करोड़। हम सभी आत्माओं का बाप एक अनादि है। फिर सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सभी मनुष्य तो सदैव नहीं हैं ना। आत्माओं को ही भिन्न2 पार्ट बजाना है। इस झाड़ का पहले2 थुर है देवी–देवताओं का, फिर उनसे ट्युब्स निकलते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चों में आकर के क्या करता हूँ। आत्मा में ही धारण होती है ना। बाप बैठ सुनाते हैं मैं आया कैसे। तुम बच्चे जो पतित बने हो तो याद करते थे। सतयुग त्रेता में तो तुम सुखी थे। तो याद नहीं करते थे। द्वापर के बाद जब दुःख जास्ती हुआ है तब पुकारा है– हे! परमपिता परमात्मा, बाबा। हाँ, बच्चों सुना। क्या चाहते हो ? बाबा आओ हम बहुत पतित बने हैं। हम बहुत दुःखी हुये हैं। हमको आकर पावन बनाओ। कृपा करो। आशीर्वाद करो। तुमने मुझे पुकारा है। बाबा आकर हम पतितों को पावन बनाओ। पावन सतयुग को कहा जाता है। यह भी बाप खुद बैठ बताते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार जब संगमयुग आता है, जब सृष्टि पुरानी होती है, सभी मनुष्य मलेच्छ बन जाते हैं, पतित को मलेच्छ कहेंगे ना। देवताएँ हैं पावन। इसलिये पतित मनुष्य उन्हों को जाकर माथा टेकते हैं। सन्यासियों ने भी विकारों को छोड़ा है। अभी तुम समझते हो सन्यास भी दो प्रकार के हैं। वह है हठयोग, उनको राजयोग नहीं कहा जाता। भगवान को एक तो जानते ही नहीं और उनसे मिलने लिये घर–बार छोड़ जंगल में जाते हैं। कहते हैं स्त्रियाँ नागिन हैं तो खुद नाग ठहरे ना; परन्तु हम नाग हैं यह समझते नहीं हैं। उनके साथ तो जरूर खुद भी नाग बन जाते हैं ना। तो उनका है हद का सन्यास। घर–बार छोड़कर जाकर जंगल में रहते हैं। गुरूओं के फॉलोअर्स बनते हैं। गोपीचन्द राजा के लिये भी एक कथा सुनाते हैं। उसने कहा तुम घर–बार छोड़ते क्यों हो? कहाँ जाते हो? शास्त्रों में बहुत कुछ कहानियाँ आदि हैं। अभी तुम ब्रह्माकुमारियाँ राजाओं को भी जाकर ज्ञान और योग सिखलाते हो। एक अष्टावक्र गीता भी है। जिसमें दिखाते हैं राजा को वैराग्य आया। बोला, हमको कोई परमात्मा से मिलावे। ढिंढोरा पिटवाया। वह यही समय है। तुम जाकर राजाओं को ज्ञान देते हो ना बाप से मिलाने लिये। जैसे2 तुम मिले हो तो औरों को भी मिलाने कोशिश करते हो। इस पर एक कहानी बनाई है। तुम्हारे में से एक गई; क्योंकि तुम बहुत खुबसूरत बनते हो भविष्य में। कहानी देखो कैसे बैठ बनाई है। एक गये राजा के पास तो रास्ते में शिव पार्वती बैठे थे। कब शंकर–पार्वती भी कह देते हैं; क्योंकि वह तो शिव–शंकर में भेद नहीं समझते हैं। तो उन्होंने देखा यह राजा के पास जाते हैं, सुन्दर बहुत हैं। तुम आत्मा प्योर खुबसूरत बनते हो ना। बाप आत्मा को खुबसूरत बनाते हैं तो फिर शरीर भी खुबसूरत अर्थात् गोल्डेनएजेड मिलता है। तो पार्वती ने देखा यह तो नमस्कार भी नहीं करते हैं इनको खुबसूरत का हठ है। तो उनको बोला अहंकार है तुमको खुबसूरत का। तुम कुबरा अष्टावक्र हो जाओ। सचमुच हो गया। ऐसा कोई होता नहीं है। यह बातें बैठ सुनाई हैं। अच्छा, वह राजा के पास गया। राजाने कहा यह कुबड़ा हमको ज्ञान कैसे देगा? भगवान से यह कैसे मिलावेगा? उसने कहा– राजा जी, आप मेरे शरीर को नहीं देखो। आत्मा को देखो। मैं तुमको भगवान से मिलाऊँगा। इसलिये ही आया हूँ। तुम भी कहते हो हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा। मुक्ति जीवनमुक्ति देंगे। फिर उस राजा को जंगल में ले गया। बोलो, शिवबाबा को याद करो और कोई को नहीं। बस वह देखते2 ध्यान में चला गया। तुम्हारे पास भी शुरू में बैठे2 एक दो को देखते ध्यान में चले जाते थे ना। बड़ा वन्डर लगता था। बाप था ना इनमें। तो वह चमत्कार दिखाते थे। वह सभी की रस्सी खैंच लेते थे। बापदादा इकट्ठे हो गये ना। कब्रस्तान बनाते थे। सभी बाप की याद में सो जाओ। सभी ध्यान में चले जाते थे। यह सभी शिवबाबा चतुराई थी। इसको फिर कोई जादू समझने लगे। यह था शिवबाबा का खेल। बाप जादूगर, सौदागर, रत्नागर है ना। धोबी भी है, सोनार भी है। वकील भी है। सभी को रावण के जेल से छुड़ाते हैं। उनको ही सभी बुलाते हैं हे! पतित–पावन दूर देश के रहने वाले..... आकर हमको पावन बनाओ। आओ भी पतित दुनियाँ में, पतित शरीर में

हमको आकर पावन बनाओ। अभी तुम उनका भी अर्थ समझते हो। बाप आकर बतलाते हैं तुम बच्चों ने रावण के वश में हमको बुलाया है। हम तो परमधाम में बैठा था। स्वर्ग स्थापन करने लिये मुझे नर्क, रावण के देश में बुलाया कि अब सुखधाम में ले चलो। अभी तुम बच्चों को ले जाते हैं। तो यह है ड्रामा। मैंने जो तुमको राज्य दिया था वह पूरा हुआ फिर द्वापर से रावण चला है। 5 विकारों में गिरे। उनके फिर चित्र भी हैं जगतनाथ पुरी में। जो पहले नम्बर में था वही फिर 84 जन्म ले अभी पिछाड़ी में है, फिर उनको ही पहले नम्बर में जाना है। यह ब्रह्मा बैठा है। विष्णु भी बैठा है। उनका आपस में क्या कनेक्शन है दुनियाँ में कोई भी नहीं जानते। ब्रह्मा सरस्वती यह वास्तव में सतयुग के मालिक लक्ष्मी–नारायण थे। अभी नर्क के मालिक हैं। अभी यह तपस्या कर रहे हैं यह लक्ष्मी–नारायण बनने लिये। दिलवाला मंदिर में पूरा यादगार है। बाप भी यहाँ ही आये हैं। इसलिये अभी लिखते भी हैं आबू सब तीर्थों में, सभी धर्मों के मुख्य तीर्थों में मुख्य तीर्थ है; क्योंकि यहाँ ही बाप आकर सर्व की सद्गति करते हैं। तुम शान्तिधाम होकर फिर स्वर्ग में जाते हो। सभी शान्तिधाम चले जाते हैं। वह है जड़ यादगार। यह है चैतन्य। जब तुम चैतन्य में वह बन जावेंगे, फिर भक्तिमार्ग में यह यादगार बनावेंगे। अभी तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। मनुष्य समझते हैं स्वर्ग ऊपर में है। अभी तुम समझते हो यह भारत ही स्वर्ग था। अभी नर्क है। यह चक्र देखने से ही सारा ज्ञान आ जाता है। सतयुग में थोड़े देवताएँ ही होते हैं। मनुष्य भी थोड़े, फिर द्वापर से और2 धर्म आते हैं। तो अभी देखो कितने धर्म हैं। कितने मनुष्य हैं। यह है ही आयरन एज। अभी तुम संगमयुग पर हो। सतयुग में जाने लिये पुरूषार्थ करते हो। कलियुग में हैं सभी पत्थर बुद्धि। तुम्हीं पारस बुद्धि थे, तुम्हीं पत्थर बुद्धि बने हो, फिर पारस बुद्धि बनना है। अभी बाप कहते हैं तुमने बुलाया है, मैं आया हूँ और तुमको कहता हूँ काम को जीतो तो जगतजीत बनेंगे। मुख्य यह विकार ही है। सतयुग में हैं सभी निर्विकारी। कलियुग में हैं विकारी। बाप कहते हैं विकारी कैसे जगत के मालिक बनेंगे। अभी निर्विकारी बनो। 63 जन्म विकार में गये हो अभी यह अन्तिम पवित्र बनो। मैं स्वर्ग स्थापन करने आया हूँ। तो अभी मेरी श्रीमत पर चलो। मैं जो कहूँ वह सुनो। शास्त्रों का भूसा बुद्धि से निकालो। इन शास्त्रों आदि ने तुमको इस हाल में पहुँचाया है। तीर्थ यात्रा आदि करते तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हो। इसलिये यह सीढ़ी बनाई है। अभी तुम पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बनाने का पुरूषार्थ कर रहे हो। तुम्हीं पूरे सीढ़ी चढ़ते हो और उतरते हो। जैसे कि तुम जिन्न हो। जिन्न की भी कहानी है ना। उसने बोला, काम दो। तो कोई ने बोला, सीढ़ी चढ़ो और उतरो। बहुत मनुष्य कहते हैं, भगवान को क्या पड़ी थी जो सीढ़ी चढ़ाते और उतारते हैं। भगवान को क्या हुआ जो ऐसी सीढ़ी बनाई। बाप समझाते हैं यह अनादि खेल है। तुमने 5000 वर्ष में 84 जन्म लिये हैं। 5000 वर्ष तुमको नीचे उतरने में लगे हैं, फिर ऊपर जाते हो सेकण्ड में। यह है तुम्हारी योगबल की लिफ्ट। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। बाप आते हैं तो सेकण्ड में तुम ऊपर चढ़ जाते हो। फिर नीचे उतरने में 5000 वर्ष लगे हैं। कलाएँ कम होती जाती हैं। चढ़ने की तो लिफ्ट है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। सतोप्रधान बनना है। फिर आस्ते आस्ते तमोप्रधान बनेंगे। 5000 वर्ष लगे हैं। अच्छा फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान में यह एक अन्तिम जन्म। अभी तब कि मैं तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूँ तो तुम पवित्र क्यों नहीं बनेंगे; परन्तु कामेषु, क्रोधेषु भी हैं ना। विकार न मिलने से फिर स्त्री को मार देते हैं। नंगा कर बाहर निकाल देते हैं। आग लगा देते हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं! काम की आस पूरी न हुई तो फिर मारते हैं, घर से निकाल देते हैं। बहुत अत्याचार होते हैं। गुरू लोग भी विकार कर गंदा बना देते हैं। बाबा को तो लिखकर देते हैं। भाई ने हमको खराब किया। बाप ने हमको खराब किया। गुरू ने विकारी बनाया। बाबा पूछते हैं, छोटे में कोई विकार किया हो तो बताओ। इस जन्म की बात ही पूछते हैं। कोई ने ब्रह्मचर्य भंग किया हो तो बताओ। लिखकर देते हैं। बाबा कहते हैं तो लिखकर देना पड़े। अभी मूल बात बाप समझाते हैं एक को

याद करो और सभी को भूल जाना है। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को भूल मामेकम् याद करो। इसमें मेहनत है। बाबा को चार्ट लिखकर भेजते हैं सारे दिन में इतना समय याद किया। गरीब झट लिखते हैं, साहुकारों को तो बहुत कुछ है। सभी भूलना पड़े। कन्या शादी करती है तो पति में, बच्चों में, सभी में मोह हो जाता है। पहले तो कन्या को तो एक ही पियर घर की याद रहती है। माँ बाप होते हैं। बस। यह मातपिता हैं ना। त्वमेव माताश्च पिता..... आप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हो। हम पवित्र से अपवित्र बनते हैं। फिर बाप आकर पवित्र बनाते हैं। प्रवृत्ति मार्ग वालों को वास्तव में सन्यासियों को गुरू बनाना निषेध है। वह सन्यासी तो हैं हठयोगी। वह राजयोग सिखला न सकें। वह तो घर–बार छोड़ देंगे। उन्हों का निवृत्ति मार्ग ही अलग है। यह ब्रह्मा भी पतित था ना और यह लक्ष्मी–नारायण तो पावन कहे जाते हैं। क्योंकि वहाँ 5 विकार होते ही नहीं। यह खेल का राज़ बाप ही बैठ समझाते हैं और तो कोई जानते भी नहीं। निवृत्ति मार्ग वालों को शास्त्र पढ़ने का भी अधिकार नहीं है। यात्रा पर असल में ब्राह्मण जाते हैं। अभी सन्यासी भी जाने लगे हैं। गुरू भी सन्यासियों को कहते हैं। तुमको ही सन्यासी लोग विधवा, ऑरफन बनाते हैं। घर से बाप चला गया, तो ऑरफन बन जाते, विधवा बन जाती है ना। फिर माईयाँ जाकर उनका ही पाँव धोती हैं। कितना अज्ञान है। मूर्खता है ना। जिन्होंने ऑरफन और विधवा बनाया उन्हों के फिर चरण धोते हैं। बाप के पास आते हैं तो समझ मिलती है। तो भक्तिमार्ग छोड़ देते। भक्ति मार्ग है ही भूलों का घर। जहाँ से जाते हैं मूँझ पड़ते हैं। जैसे भूल–भुलैया में होता है ना। दरवाजा मिलता ही नहीं। एक ही बाप रास्ता बताते हैं। वह तो कह देते, कुछ भी करो। भक्ति करो, शास्त्र पढ़ो, तीर्थ करो रास्ता मिलेगा। बाप कहते हैं रास्ता है ही एक। इसलिये तुम लिखते भी हो गेट वे टु हेविन। भक्ति मार्ग में कितना मुंझारा है। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुड मॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

<u>प्वाइंट्सः–</u> विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति। हम एक ही की याद में रहते हैं। हमको सिखलाने वाला है बाप। कैसे सिखलाते हैं सो आकर समझो। ऐसी बात लिखो जो सुनने बिगर रह न सके। योगबल से विश्व की बादशाही कैसे लेते हो आकर समझो। आज से 5000 वर्ष पहले भारत विश्व का मालिक था, फिर 84 जन्मों बाद यह हाल हुआ है। ऐसे ऐसे लिखो, फिर देखना कितने ढेर आते हैं। बच्चों की बुद्धि में है हम आत्माएँ अब जा रहे हैं। यह शरीर पुरानी जूती है। बाप ने कहा है मीठे2 बच्चों मुझे याद करो। यह सभी खत्म हो जाने हैं। शरीर भी रहने का न है। इसलिये बाप कहते हैं यहाँ कोई साथ ममत्व न रखो। निरन्तर बाप को याद करने की कोशिश करो। स्त्री को पति की कितनी याद रहती है। वह तो गटर में डालते हैं। यह बाप तो तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं। तो ऐसे बाप को याद करते और स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। तुम्हारे पाप इसी याद से भस्म होंगे। पवित्र बनना है ना। इतनी याद की मेहनत करनी है। 5 मिनट याद में रहते हो फिर भूल जाते हो। यहाँ सामने बैठ समझते भी हो शिवबाबा सुनाते हैं। फिर वह भी भूल जाते हैं। धारणा नहीं होती। बाप को भूल जाने कारण प्वाइंट बहुत कम धारण करते हैं। पद भ्रष्ट हो जाता। एक दिन होगा जो गली–गली में तुम्हारे सेन्टर्स होंगे। बाप तो कहते हैं आधा, पौना, दो माईल तक भी खोलो। यहाँ आते ही हैं दर दर माथा टेकने से बचने लिये। बाप को सर्वव्यापी कह देते हैं। बुद्धि कितनी वर्थ नॉट ए पेनी है। अहंकार कितना रहता है! मैं फलाना हूँ, यह हूँ। अभी तुम बच्चों को यह ही बुद्धि में रहना है, सभी को बाप का परिचय देवें। यह बहुत ही डर्टी दुनियाँ है। स्वर्ग का नाम सुनकर ही दिल खुश हो जाती है। इसलिये बाप को और स्वर्ग को याद करना है। बाप स्वर्ग की बादशाही देते हैं। कितना सहज है। बाप और वरसा। अभी तुम बाप का वरसा ले रहे हो, औरों को दिला रहे हो। जो बहुतों को दिलाते हैं वह ऊँच पद पाते हैं। अच्छा, ओ।

शिवबाबा याद है? स्वर्ग की बादशाही याद है?